

शेख फ़रीद – सबद ११९
सबरु एहु सुआउ जे तूं बंदा दिडु करहि ॥
सलोक, शेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८४

सबरु एहु सुआउ जे तूं बंदा दिडु करहि ॥
वधि थीवहि दरीआउ टुटि न थीवहि वाहड़ा ॥ ११७॥

सार: धैर्य, वह अनमोल गुण है जो व्यक्तियों को चुनौतियों का सामना करते समय अडिग रहने की शक्ति देता है। इसका महत्व केवल सहनशीलता तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह मज़बूत चरित्र और अटूट ईमानदारी को गढ़ने के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। धैर्यवान व्यक्ति आवेगपूर्ण प्रतिक्रियाओं, बाहरी दबावों या विपरीत परिस्थितियों के सामने दृढ़ता से खड़ा रहता है और स्वयं में नियंत्रण व संयम की भावना को दर्शाता है। धैर्य आंतरिक स्थिरता को विकसित करता है जिससे तनावपूर्ण समय में भी संतुलित प्रतिक्रिया देना संभव हो पाता है। इस प्रकार, सजगता के साथ धैर्य को अपनाना न केवल व्यक्तिगत विकास की ओर ले जाता है बल्कि यह स्थायी शांति और संतोष के लिए ठोस नींव भी रखता है।

सबरु एहु सुआउ जे तूं बंदा दिडु करहि ॥
ऐसा धैर्य लाभकारी होता है जो व्यक्ति को अडिग बनाता है। इससे यह पता चलता है कि धैर्य रखना तभी सार्थक है जब यह चरित्र में अटूट ईमानदारी और दृढ़ता लाए।

वधि थीवहि दरीआउ टुटि न थीवहि वाहड़ा ॥ ११७॥
यह विशाल नदी की तरह फैलता है, न कि टूटकर एक छोटी और सिकुड़ती हुई धारा बन जाता है। यह ऐसी अंतरात्मा को दर्शाता है जो निरंतर विस्तृत और गहरी होती जाती है, जो गति पकड़, अस्तित्व के मूल-तत्व की ओर प्रवाहित होती है। (११७)

तत्त्व: शेख फ़रीद स्पष्ट करते हैं कि सब्र का अभ्यास करना, हमें अडिग बनने में मदद करता है, वह बुनियादी गुण है जो हमारे चरित्र को मज़बूत बनाता है। यह गुण एक विशाल नदी की तरह प्रवाहित होता है जो अलग-अलग धाराओं में बँटने के बजाय एकता को बढ़ावा देता है। इस तरह, सब्र को अपना सामूहिक शक्ति और सद्भाव का मार्ग बन जाता है जो हमारे रिश्तों और समुदायों को समृद्ध करता है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com